IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भारत–पाक सम्बन्धों में कश्मीर समस्या का एक विश्लेशणात्मक अध्ययन

**नन्दन सिंह**

असिस्टेंट प्रोफेसर गेस्ट फैकल्टी

राजनीतिक विज्ञान विभाग

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्वामी राम तीर्थ परिसर बादशाहीथौल 249199

**सारांश–** भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक 1947,1965,1971,तथा 1999 में चार सैनिक युद्ध हो चुके है लेकिन पाकिस्तान को किसी भी युद्ध में सफलता नहीं मिली गत 75 वर्षों में पाकिस्तान की भूमि से संचालित तथा पाकिस्तानी तत्वों द्वारा समर्थित आतंकवाद दोनों देशों के मध्य एक प्रमुख समस्या बना हुआ है भारत और पाकिस्तान के संबंध 21वीं सदी में भी जटिल परिस्थितियों से जूझ रहे है भारत व पाकिस्तान के संबंध में आजादी के बाद से काफी उतार चढाव आए लेकिन आज भी भारत पाकिस्तान के बीच के संबंधों में सुधार नहीं आए विकास की गति जाति समुदाय के टकराव के कारण अपना सम्पूर्ण विकास नहीं कर पा रहा है क्योंकि जातिगत दंगों से कश्मीर में अमन चैन छीन लिया गया है भारत और पाकिस्तान के मध्य संम्बन्धों में बाधक एवं तनाव का प्रमुख कारण कश्मीर की समस्या है।

**कीवर्ड –** संबंध, आतंकवाद, युद्ध, विभाजन,साम्प्रदायिक दंगे, समझौते आदि।

**प्रस्तावना–** भारत–पाकिस्तान संबंध इस समय जटिल परिस्थितियों से जूझ रहा है भारत–पाकिस्तान के संबंध में आजादी के बाद से काफी उतार चढाव आऐ लेकिन आज भी भारत पाकिस्तान के बीच के संबंधों में सुधार नहीं आया स्वतंत्रता के प्रारम्भिक वर्षों में भारत पाकिस्तान के संबंध प्रभावित हुऐ भारत की विदेश नीति का एक सबसे अधिक कठिन भाग पाकिस्तान के साथ संबंधों का संचालन करना रहा है भारत के पाकिस्तान के साथ संबंधों ने भारत के समस्त विदेश नीति के प्राय सभी पक्षों तथा इसके सारे अंतराष्ट्रीय दृष्टिकोणों को प्रभावित कर रखा है 1947ई0 में भारत के विभाजन द्वारा पाकिस्तान के बीच दुर्भावना पैदा हो गई यह विभाजन साम्प्रदायिकता तथा मुस्लिम लीग के दो राष्ट्रीय सिद्धान्त का परिणाम था जिसने दोनों देशों के बीच काफी कटुता आई थी पहले तो भारत की विचारधारा पाकिस्तान के खो जाने कि हानि के बारे में थी तथा पाकिस्तान की विचारधारा भारत की ओर से खतरे तथा धमकी द्वारा निर्देशित थी, पाकिस्तान को यह डर था कि भारत ने बटवारे को स्वीकार नही किया इसलिए वह पाकिस्तान को खत्म करने का प्रयास करेगा तथा पाकिस्तान ने भारत विरोधी विदेश नीति को अपनाया, भारत–पाकिस्तान के साथ अच्छे पडोसियों वाले संबंध स्थापित करने के लिए तैयार था 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत को स्वाधीनता देने और विभाजन के कारण पाकिस्तान बनने से विश्व के मानचित्र पर दो स्वतंत्र देश अस्तित्व में आए यह समझा गया कि भारत के विभाजन के पश्चात् परस्पर शांति स्थापित हो जाएगी और भारत पाकिस्तान मिलकर अंतराष्ट्रीय राजनीति में कार्य करेगें परन्तु इसके विपरीत हुआ।

**विषय का महत्व** वर्तामान समय में भारत पाक सम्बन्धों का अध्ययन का विषय अति महत्व है किन्तु ब्रिटिश सरकार के द्वारा भारत को स्वाधीनता देने और विभाजन के कारण पाकिस्तान बनने से विश्व मानचित्र पर दो स्वतंत्र देश अस्तित्व में आए

इसके विपरीत दोनों देशों के मध्य देसी रियासतों को विलय करने की होड मच गई। कई रियासत ने पाकिस्तान में विलय कर दिया क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने शर्त रखी थी कि ये देसी रियासतें किसी भी देश भारत या पाकिस्तान में विलय कर सकती है व स्वतंत्र रहकर भी रह सकती है, परन्तु दोनों देशों के देसी रियासतो को मिलाने में संघर्ष होता रहा जिससे दो देशों के मध्य आपसी कटुता आ गई और संघर्ष व युद्ध जैसी घटनाएं होने लगी इस लिए यह विषय अध्ययन कि दृष्टि से काफी महत्पूर्ण है। भारत और पाक के मध्य समस्या को जानना, वर्तमान समय में आर्थिक, राजनैतिक व समाजिक महत्व को जानना व यह भी जानना था कि भारत–पाक सम्बन्धों में कड़वाहट क्यों आ रही है? क्योंकि आजादी से पहले भारत–पाक एक ही देश थे जो 1947 के बाद जो अलग–अलग होकर दो देशों में बट गया और साम्प्रदायिक दंगे हिन्दु और मुस्लिम कट्टरपंथियों द्वारा विभाजन कर दिया गया। जिसका परिणाम आज तक नहीं मिल पाया आज भी कश्मीर की जनता में डर व आतंकवाद युद्ध जैसा माहौल बना हुआ है और कश्मीर की जनता का विकास भी अर्द्धधरातल में लटका हुआ है।

**शोध का उद्देश्य** 21वी सदी में भारत–पाक सम्बन्धों का अध्ययन करना है, इन दोनों देश के मध्य आपसी मतभेद को कम करना तथा जम्बू–कश्मीर समस्या का हल निकला है।

**प्राकल्पना** सामाजिक समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन में प्राक्लपनाओं का निर्माण उनका प्रयोग उनकी उपयोगिता अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है अनुसंधान के निष्कर्षो के विषय में अनुसंधानकर्ता का पूर्व अनुमान होता है प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित प्राकल्पना हैं

(1) भारत पाकिस्तान के बीच कश्मीर समस्या के लिए ऐतिहासिक कारण ज्यादा जिम्मेदार है।

(2) कश्मीर समस्या के लिए कुछ हद तक ब्रिटिश नीतियॉ भी जिम्मेदार है।

(3) साम्प्रदायिकता का आधार भी कश्मीर समस्या के सामाधान में प्रमुख बाधा है।

(4) भारत–पाक समस्या का सामाधान के लिए दोनों देशों के मध्य शांति वार्तालाप से ही संभव है।

**भारत–पाक सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** भारत–पाकिस्तान के मध्य आजादी के बाद से लगातार कई बार वार्ता के दौर चले विचार विमर्श हुआ किन्तु कोई सन्तोषजनक समाधान आज तक नहीं निकल पाया भारत पाकिस्तान के 1947 आजादी के बाद से कई युद्ध व कई समझौते किए गए है लेकिन 1996 में कश्मीर पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण किए जाने के बाद से ही पं0 जवाहरलाल नेहरू ने निरन्तर इस बात को लेकर प्रयास किया कि दोनों राष्ट्रो के मध्य किसी भी प्रकार युद्ध न करने सम्बन्धी एक स्थाई समझौता हो जाए परन्तु उसमें वे हमेशा असफल सिद्ध हुए सबसे पहला प्रयास 22 दिसम्बर 1949 को किया गया, जब भारत ने नई दिल्ली में पाकिस्तान के उच्चायुक्त को एक प्रस्तावित संयुक्त घोषणा का सुझाव दिया, उसके उपरांत कुछ दिन बाद पं0 नेहरू ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को पत्र लिखा कि मैं समझता हूँ कि हम दोनों भारत तथा पाकिस्तान इस बात के लिए सहमत हो जाए कि कोई भी कारण क्यों न हो हम आपस में युद्ध नहीं करेगें तथा अपनी समस्याओं को शान्तिपूर्ण तरीके से हल करेगें।

**ताषकन्द समझौता 1965** ताषकन्द समझौते में 9 अनुच्छेद है इसकी भूमिका में कहा गया है कि भारत के प्रधानमंत्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को सामान्य बनाने के लिए निम्न प्रावधान दिए गए।

1 अगस्त 1965 कि स्थिति पर दोनों देशों की सेनाओ कि वापसी।

2 आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का संकल्प।

3 एक–दूसरे के विरूद्ध प्रचार बन्द करने की सहमति।

4 राजनायिक सम्बन्धों की पुनस्थापना।

5 युद्धबन्दियों की अदला–बदली की व्यवस्था किया जाय।

**भारत–पाक युद्ध(1971)** पाकिस्तान ने चीन और अमेरिका से पर्याप्त सहायता प्राप्त करने के बाद भारत को धमकी देना प्रारम्भ कर दिया था ऐसी स्थिति में याहिया खाँ ने 25 नवम्बर 1971 को चीनी प्रतिनिधि मण्डल के सम्मान में दिए गए भोज के अवसर पर घोषणा कि वह 15 दिन मे भारत के विरूध युद्ध की घोषणा कर देगा प्रधानमंत्री ने मंत्री मण्डल की बैठक बुलाई, पाकिस्तान के आक्रमण का सामना करने के लिए आपातकाल लगाने 3 दिसम्बर 1971 को रात्रि 11 बजे भारतीय राष्ट्रपति ने संकट कालीन स्थिति की घोषणा की भारत ने पाकिस्तान के इस हमले का जबाब बड़ी तेजी से दिया और वायुसेना के साथ भारत की स्थल और जल सेना भी पूर्णरूप से सक्रिय हो गई।

**21वी शताब्दी मे भारत–पाक सम्बन्ध एवं समस्या** 1947 में भारत व पाकिस्तान का विभाजन ब्रिटिश शासन की फूट डालो व शासन करो कि नीति तथा जिन्ना के द्विराष्ट्र सिद्धान्त का परिणाम था इन दोनो का आधार धर्म, जाति, साम्प्रदायिकता थी विभाजन के बाद ही दोनों देशों के बीच कश्मीर के विलय को लेकर विवाद आरम्भ हो गया पाकिस्तान इस समस्या के समाधान को ही भारत के साथ सम्बन्धों में सुधार कि पूर्व शर्त मानता है। लेकिन यह समस्या इतनी जटिल है कि इसके सामाधान की कोई उम्मीद नहीं दिखाई दे रही है सितंबर–अक्टूबर 2001 में अफगानिस्तान समस्या द्वारा निर्मित वातावरण ने भारत–पाकिस्तान संबंधों को उलझनपूर्ण बना दिया इसलिए स्थिति और भी उलझ गई थी 13 दिसंबर 2001 के दिन भारतीय संसद पर आंतकवादी हमला हुआ और इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिले कि इस कार्यवाही के पीछे पाकिस्तान की धरती से कार्य कर रहे भारत विरोधी आतंकवादी संगठनों का हाथ था। भारत–पाक सम्बन्धो को शांति–मित्रता और सहयोग की प्रक्रिया को दिशा देने के लिए भारत ने 22 अक्टूबर 2003 को कई ऐसे कदमों का प्रस्ताव रखा जिनका उददेश्य आपसी विश्वास को बढाना था निम्न प्रस्ताव थे

1 श्रीनगर और मजफ्फराबाद के बीच बस सेवा आरम्भ करना।

2 दिल्ली–लाहौर बस सेवा का विस्तार करना।

3 मुम्बई कराची नाव यात्रा आरम्भ करना।

4 मुन्नाबाओं और खोकरापार रेल सम्पर्क स्थापित करना।

1 से 9 जनवरी 2004 के दिन दो वर्षो के बाद एक विमान ने नई दिल्ली में पाकिस्तान के लिए उडान भरी इससे पहले पहली जनवरी 2004 के दिन पाकिस्तान की हवाई सेवा की एक उडान लाहौर से नई दिल्ली तक की यात्रा कर चुकी थी इस प्रकार 9 जनवरी के दिन आपसी हवाई संपर्क से फिर से चालू हो गया।

**पाक द्वारा आतंकवाद को प्रोत्साहन** भारत और पाकिस्तान के बीच अत्यधिक तनाव का कारण पाकिस्तान द्वारा कश्मीर और पंजाब में आतंकवादियों को प्रोत्साहन देना है इस सन्दर्भ में आतकवादियों के प्रशिक्षण केन्द्र–कसूर, कहूता, एमीनाबाद तथा मियावली में कार्यरत थे बाद में भारत द्वारा सैनिक कार्यवाही किए जाने पर उन प्रशिक्षण केन्द्रों को स्वात,बानू तथा कोयटा में स्थानांतरित कर दिया गया मार्च 1993 में मुम्बई में हुए बम विस्फोट ने इस तर्क पर मुहर लगा दी पाकिस्तान भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करता है पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ़ सहित कई नेताओं ने कश्मीर की स्थिति को तोड़ मरोड़ कर आतंकवादियों को भारत के विरूद्ध उकसाया एवं हजरत बल की घटना के सम्बन्ध में उग्रवादियों को उगसाया एवं साम्प्रदायिक भावना को भड़काया जम्बू के डोडा क्षेत्र को पाकिस्तान के भाड़े के आतंकवादियों ने अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया हुआ था।

**कारगिल संघर्ष सम्बन्धों की दुःखत परिणाम** हमारे समाज मे ऐसी मान्यता है कि व्यक्ति कभी–कभी सोचता कुछ है और हो कुछ और जाता है कभी–कभी राष्ट्रों पर भी यह बात लागू हो जाती है भारत–पाक के बीच भी कुछ ऐसा ही हुआ कुछ माह पहले प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजयेपी ने भारत–पाक सम्बन्धों को सुधारने के लिए लाहौर दिल्ली बस सेवा प्रारम्भ किया जिससे भारत–पाक सम्बन्धों में मतभेद खत्म होगा व शान्ति स्थापित की जाए किन्तु कारगिल में युद्ध थोपकर इन सम्बन्धों में विराम लगा कर तीन माह पूर्व स्थापित शान्ति पूर्ण प्रक्रिया का अन्त कर दिया गया

**जल विवाद** दोनों देशों के मध्य एक समस्या नदियों के जल के बँटवारे के सम्बन्ध में थी और उसकी सहायक नदियाँ भारत से होकर गुजरती है विभाजन के पश्चात पाकिस्तान को डर था कि अगर हमारे बीच सम्बन्धों में मदभेद बना रहा तो भारत इन नदियों के बहाव को रोककर अपने भू–भाग में इन्हें मोड़ सकता है जिनके कारण पाकिस्तान को सिचांई के पानी की कमी का सामना करना पड़ेगा जिससे इसे बहुत अधिक क्षति उठानी पड़ेगी भारत को भी अपने सिचाई के साधनों में वृद्धि करनी थी 19 सितम्बर 1960 को विश्व बैंक के मध्यस्ता में सिन्धु बेसिन के पानी के बटवारे में दोनों देशों में मध्य भारत के प्रधानमंत्री पं0नेहरू जी तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूख खाँ के बीच नहरी पानी समझौता सम्पन्न हुआ लेकिन वर्तामान समय मोदी जी ने कहा है पानी और खून साथ–साथ नही बह सकता है।

**कश्मीर में सम्प्रदायिक एंव जाति दंगे** कश्मीर में विकास गति जाति समुदाया के टकराव के कारण अपना सम्पूर्ण विकास नहीं कर पा रहा है कश्मीर के इतिहास में सबसे बड़ा जातिगत दंगा 19 फरवरी 1990 में कश्मीरी पण्डितों पर असहनीय व नरसंगार किया गया था 19 वीं सदी में कश्मीरी पण्डितों की संख्या 4 से 7 लाख की आबादी थी परन्तु 1990 के नरसंहार ने हिन्दु पण्डितों को कश्मीर छोड़ने से मजबूर कर दिया गया इस असहनीय अत्याचार में लाखों पण्डितों के घर जला दिए गए और कश्मीरी पण्डितों को धर्म बदलवाने में मजबूर कर दिया गया और आज 32 साल पूरे होने पर भी कश्मीरी पण्डितों के जख्म अभी भी भरे नहीं हैं न उन्हें इंसाफ मिला न सम्मान मिला रोजगार व कश्मीरी पण्डितों की संख्या घट रही है और युवा पीढ़ी में नौकरी न मिल पाने व शदी के लम्बे समय तक टाल देना यह सोच उन्हें समय से पहले बूढ़ा बना रही है जिससे कश्मीरी पण्डितों को पलायन करना पढ़ रहा है जिससे कश्मीरी पण्डितों की आबादी घट रही है आज भी कश्मीर में जातिगत दगों द्वारा आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। आज भी पाकिस्तान अपनी चाल और जातिगत दगों से बाज नही आ रहा है पाकिस्तान द्वारा संसद पर हमला व कई धमाकों व मुम्बई में 26/11 हमले द्वारा भारत को दहला दिया जिसमें भारत की कार्यवाही में कई आतंकवादियों को मार गिराया कश्मीर में घुसपैठ की वारदात तो लगभग कई वर्षों से चली आ रही है आज तो घुसपैठ सैनिक व पुलिस स्टेशनों को निशाना बना रहे है

**पठानकोट हवाई अड्डा** 1 जनवरी 2016 वायु सेना अड्डो पर जेईएम के 4 आतंकियों ने हमला किया, 7 लोग मारे गए तथा उड़ी सैनिक अड्डों 18 सितम्बर 2016 जैक्स ऐ मोहम्मद के 4 आतंकियों ने परिसर में घुसकर 19 जवानों को मार डाला।

**सर्जिकल स्टाइक** पाकिस्तान कब्जे वाले कश्मीर में एक साथ कई आतंकियों शिविरों के खिलाफ सेना कि विशेष अभियान बल कि करीब 100 विशेष प्रशिक्षित जवान 28 सितम्बर की देर रात नियत्रंण रेखा के पार कई जगहों पर चुपचाप इंतजार कर रहे है चंद्रमा की किरणें धीरे–धीरे मध्यम पड़ती जा रही थी और धूप अंधेरा छाता जा रहा था भारतीय सेना की यह अत्याधुनिक प्रशिक्षण से लैन्स पैराशूट रेजिमेंट कि विशेष टुकड़ी निर्णायक पल कि पहले मानों गुमनाम सी थी ये जवान उबड़–खाबड़ पीर पंजाल की पहाड़ियों में जैसें घुल गए थे उन्होनें अपनी पहचान के चारों निशान मिटा दिए थे उनकी पोशाक जंगल के रंग में समा गई थीं चेहरे हरे रंग से पुते हुए थे चमड़ी पर मिट्टी की एक परत चढ़ी थी ताकि शरीर की गंध न आए उनके हथियारों पर काला रंग चढ़ा था ये करीब 48 घंटे से झाड़ियों में पड़े थे उनके दिमाग में अपने मिशन की कामयाबी कें अलावा कुछ नहीं था निर्णायक जवाबी कार्यवाही 29 सितम्बर का अभियान इस मायने में अलग था कि 200 किमी. के दायरे में कई ठिकानों पर एक साथ कार्यवाही की गई और दिल्ली में बैठे वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों की उन पर नजर थी जिसमें आतंकियों के ठिकानों व कई आतंकियों को मार गिराया वो उनके बारूद के जखीरे को नष्ट किया गया व आतंकियों को काफी नुकसान हुआ 29 सितम्बर को जब लोन्च पैड से लपटे उठ रही थी नई दिल्ली में डीजीएमओ लेफ्टिनेट जनरल रणबीर सिंह ने एक प्रेस वार्ता में एलान किया कि भारत ने हमलें के मकसद से आतंकियों की घुसपैठ की पक्की सूचना पाकर उनके खिलाप सीमा के पास सर्जिकल स्टाइक को अंजाम दिया है।

## सुझाव

1 भारत–पाक की आज सबसे बडी समस्या आतंकवाद है इस लिए इस समस्या पर दोनों देशों को एक टेबल पर बैठकर बात करनी चाहिए ताकि आतंकवाद समस्या का समाधान हो सकें।

2 भारत–पाक को अपने अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आस–पास वाले क्षेत्रों में पर्यटन को बढावा देना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त हो सकें ताकि जों आापस में संधर्ष है उस में कमी आ सकें।

3 भारत–पाक को वर्तामान समय में व्यापार के क्षेत्र कार्य करना चाहिए जिससे आपसी मतभेद कम हों सकें।

4 2016 से सार्क की बैठक पाक–भारत के मतभेद के कारण नही हुई दोनों देश को अपने मतभेत कम करना चाहिए तथा सार्क बैठक को सतत बुलाना चाहिए।

5 भारत पाक समस्या पर हुए विभिन्न समझौतो को पाकिस्तान–भारत द्वारा पालन करने से भारत पाक समस्या का निराकरण किया जा सकता है इस लिए दोनों देशों को सभी समझौतो का पालन करना चाहिए।

6 आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त लोगों पर ठोस से ठोस कदम उठाए जाए दोनों देशों में ताकि शान्ति स्थापित किया जा सकें।

7 धर्मपरिवर्तन करने वाले कट्टरपन्थी नेताओं पर तथा भड़काओं भाषण देने वालो के खिलाफ कठोर कार्यवाई किया जाय।

8 भारत–पाकिस्तान को एक–दूसरों के विरूद दुष्प्रचार नही करना चाहिए।

**निष्कर्ष** जब से देश आजाद हुआ है कश्मीर समस्या का समाधान अभी भी नही हुआ है भारत ने समय–समय पर जम्बू कश्मीर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया लेकिन सभी प्रयास निरर्थक रहे है आतंकवाद दोनों देशों के मध्य एक प्रमुख समस्या बना हुआ है लेकिन पाकिस्तान आतंकवाद के स्थान पर कश्मीर समस्या को ही दोनों देशों की प्रमुख समस्या मानता है इसके विपरीत भारत आतंकवाद को दोनों देशों के मध्य तनाव का मुख्य कारण मानता है यहाँ दोनों के दृष्टिकोण में व्यापक अन्तर दिखाई देता है यदि भारत–पाक के सम्बन्ध अच्छे होगें तो दोनों देशों के मध्य आपसी व्यापार बढ़ेगा व विकास भी होगा साम्प्रदायिक दंगे व आतंकवाद पर अंकुश लगेगा एशिया महाद्वीप में नई इबादत होगी कि दो देशों की जनता एक हो गई जिससे समाज में भेदभाव खत्म होगा और भारत पाक के सम्बन्ध मधुर होगें आयात निर्यात, तकनीकी, रक्षा, शिक्षा, जल, विद्युत कई मूलभूत सुविधाएँ आसान हो जाएगी व कश्मीर समस्या का सामाधान हो जाएगा ये कहना आसान न होगा कि कब तक भारत–पाकिस्तान के सम्बन्ध अच्छे होगे और कब तक हालात सामान्य होगें क्योंकि साम्प्रदायिक दंगों ने जन्म लिया है। अतः भारत–पाकिस्तान को आपस में मिलकर एक टेबल पर बात करनी चाहिए ताकि जम्बू–कश्मीर समस्या का कुछ हल निकल सकें।

## सन्दर्भ ग्रथ सूची

1 बसु, डी० डी० (2018), भारत का संविधान, दिल्लीः लेक्सिस नेक्सिस बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,

2 फडिया, बी० एल० एवं फडिया, कु० दी०(2020), अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, आगराः साहित्य भवन,

3 मिश्रा, रा० जे० (2018), राज० वि० एक समग्र अध्ययन 6 संस्करण, हैदराबादः ओरियट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड,

4 लक्ष्मीकांत, एम०(2017), भारत की राजव्यवस्था 5 संस्करण, तमिलनाडुः मैकग्रा हिल एजुकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,

5 दीक्षित, जे० एन०(2005), भारत की विदेश नीति और पडोसी, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस,

6 दैनिक जागरण, ( 29 से 30 सितम्बर 2016),